

REPORT OF THE RAILWAY CONVENTION COMMITTEE

SHRI SURENDRA LATH (Orissa): Sir, I lay on the Table a copy (in English and Hindi) of the Fifth Report of the Railway Convention Committee (2004) on Rate of Dividend for 2006-07 and other ancillary matters.

STATEMENT REGARDING GOVERNMENT BUSINESS

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SURESH PACHOURI): Sir, I beg to announce that the Government Business in this House for the week commencing 21st August, 2006 will consist of:-

Consideration of any item of Government Business carried over from today's Order Paper. Consideration and return of the following Bills, as passed by Lok Sabha: the Appropriation (No.4) Bill, 2006; and the Appropriation (Railways) No.4 Bill, 2006.

Consideration and passing of the following Bills:- the Essential Commodities (Amendment) Bill, 2005; and the Union Territory of Pondicherry (Alteration of Name) Bill, 2006.

Consideration and passing of the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) and Financial Laws (Amendment) Bill, 2005, after it has been passed by Lok Sabha.

MATTERS RAISED WITH PERMISSION

Publication of objectionable material in the NCERT books

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार) : माननीय उपसभापति जी, मैं कृतज्ञ हूँ कि आप ने मुझे बोलने का अवसर दिया। मैं एक बहुत ही महत्व का विषय सदन के सामने उठाने जा रहा हूँ।

महोदय, देश के बच्चों को पढ़ाई का अवसर मिलना चाहिए, किताबें छपनी चाहिए, लेकिन एनोसीईआरटी० द्वारा जिस तरह की किताबें छापी जा रही हैं, उस से देश का अहित हो रहा है, बच्चों का अहित हो रहा है। यह Modern India History की text book है, विपिन चंद्रा की किताब को दोबारा इंट्रोज्यूस किया गया है, वर्ष 2005 में रिवाइज किया गया है। "इस में जाटों को लुटेरा कहा गया है, गुरु गोविंद सिंह ने बहादुर शाह जफर से मस्तब लिया बताया है" और सब से बड़ी बात यह है कि "इस में लोकमान्य तिलक, अरविंद घोष, विपिन चंद्र

पाल को terrorist कहा गया है" कि इन लोगों ने टेररिज्म का काम किया है ... (व्यवधान) ... ये सारी किसावें मेरे पास हैं ... (व्यवधान) ...

श्री उपसभापति : दे बोल रहे हैं न ... (व्यवधान) ...

श्री रवि शंकर प्रसाद : यह बहुत गम्भीर बात है। सारी किसावें मेरे पास हैं। देशभक्तों को बदनाम किया गया है। एक बात तो यह हुई।

दूसरी बात यह है कि बच्चों के लिए हिन्दू की किसावें हैं। मानवीय उपसभापति जी, आज मैं आपके साध्यम से दिनभ्रता से आग्रह करना चाहता हूँ। आप असंवैधानिक छीजों को यहाँ अलाउ नहीं करते। एक सवाल है कि क्या बच्चों को पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं जलास में असंवैधानिक भाषा पढ़ाई जाएगी ? मैं आपके सामने एक बात कहना चाहता हूँ। यह "अंतरा" नामक किताब है। यह मई, 2006 में छपी है। इसमें एक कथिता है, जिसके बारे में मैं आपको जरूर कहना चाहता हूँ। यह कथिता है- मोर्ची राम। यह बच्चों को पढ़ाई जा रही है। मैं बड़े आदर से और पीढ़ा से कहता हूँ- "...तो रामनामी बेचकर या रेडियो की दलाली करके रोपी कमाने में कोई फर्क नहीं है।" ... (व्यवधान) ... हम यह क्या पढ़ा रहे हैं? ... (व्यवधान) ...

श्रीमती सुषमा स्वराज (मध्य प्रदेश) : हमें बड़ी राम आ रही है ... (व्यवधान) ... यह तो ऐसी भाषा ही नहीं है, जो कही जा सके और पढ़ी जा सके ... (व्यवधान) ...

श्री रवि शंकर प्रसाद : बिल्कुल, ... (व्यवधान) ... कमा करिए ... (व्यवधान) ...

श्रीमती सुषमा स्वराज : क्या यह कथिता है? ... (व्यवधान) ... कथिता के नाम पर कलंक है ... (व्यवधान) ...

श्री रवि शंकर प्रसाद : सुषमा जी, आप सुनिए और मेरे दोस्त, राम जी भी सुनें। इसमें पांडेय बेचन शर्मा 'उम्र' की एक कहानी है। शर्मा जी, जल्द सुनिए। "लेकिन जब द्वाहुमणों के घर में बहुराजस पैदा होने लगे, तब तो यह जजमानी वृत्ति निर्णात कमीना धंधा-स्वर्य नीचातीत होकर भी दूसरों से चरण पुजवाना।" यह हम बच्चों को पढ़ा रहे हैं। आप और सुनिए। अंतरा नामक पुस्तक में लिखा है। यह NCERT की किताब है। भारत सरकार ने छपवायी है। यह मई, 2006 में बनी है। आप और सुनिए ... (व्यवधान) ... "यह अमार घौरह असंवैधानिक है।" इसमें एक कहानी में लिखा हुआ है ... (व्यवधान) ... एक निनट ... (व्यवधान) ... "अपने काम से काम रखो, क्यों हन चमारों के थकफक मे पढ़ते हो?" यह बच्चों को पढ़ाई जा रही है। मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ... (व्यवधान) ... एक निनट ... (व्यवधान) ... दूसरी पुस्तक है- आरोह। ... (व्यवधान) ... जरा मुझ अपनी बात कहने दी जाए। यह सब NCERT का प्रदिक्षण है। यह भी मई, 2006 में छपी है। इसमें एक कहानी है, जिसमें लिखा हुआ है, क्या कहूँ, एक लाइन पढ़ता हूँ... (व्यवधान) ...

श्री उपसभापति : बस, बस ... (व्यवधान) ...

श्री रवि शंकर प्रसाद : "दूसरे ने जवाब दिया, अच्छा हुआ, निकाल दिया। सबैरे-सबैरे भंगी का मुँह देखना पढ़ता था।" यह क्या पढ़ाया जा रहा है... (व्यवधान) ... और सुनिए ... (व्यवधान) ...

श्री राशिद अल्वी (आन्ध्र प्रदेश) : यह NCERT की किताब नहीं हो सकती ...
...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : यह NCERT की किताब है ...
...(व्यवधान)... मेरे पास यह NCERT की किताब है ...
...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह NCERT की किताब है ...
...(व्यवधान)... जो "भंगी, चमार जैसे शब्द इस्तेमाल कर रही है" ...
...(व्यवधान)...

श्री एस० एस० अहलुवालिया (झारखण्ड) : उपसभापति महोदय, NCERT की किताबों में
...
...(व्यवधान)...

प्रो० राम देव भंडारी (बिहार) : यह कौन-सी किताब है ...
...(व्यवधान)... किस क्लास में
पढ़ाई जाती है ...
...(व्यवधान)... जरा हम लोग भी उसको देखें ...
...(व्यवधान)... यह कौन-सी
किताब है, किस क्लास में पढ़ाई जाती है ...
...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : यह दूसरी, सातवीं, आठवीं, नौवीं, दसवीं के बच्चों को पढ़ाई
जाती है ...
...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : इसे पूरा पढ़ने की आवश्यकता नहीं है ...
...(व्यवधान)... आपने यह
गम्भीर विषय उठाया है ...
...(व्यवधान)...

डा० मुरली मनोहर जोशी (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति जी, सदन को मालूम होना
चाहिए कि वर्तमान सरकार की देखरेख में इस प्रकार की शब्दावली प्रयोग की जा रही है, कैसे
पाठ पढ़ाए जा रहे हैं और बच्चों के दिमाग में किस तरह की घृणा पैदा की जा रही है।
...
...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : उपसभापति जी, आज देश में नक्सलवाद की हिंसा हो रही
है। लोग मारे जा रहे हैं और बच्चों ने इसी "अंतरा" पुस्तक से क्षाणे पास की ...
...(व्यवधान)... इसमें लिखा है कि "ये कवि अवतार सिंह संघ नेकसलाइट आन्दोलन से जुड़े हुए थे।" इसमें
और क्या कहा गया है "मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती। पुलिस की मार सबसे
खतरनाक नहीं होती।" ...
...(व्यवधान)... इसका क्या मतलब है? ...
...(व्यवधान)... हम यह क्या पढ़ा
रहे हैं ...
...(व्यवधान)... "सरकारी नोट की मुट्ठी खतरनाक नहीं होती" और एक अंतिम बात
...
...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : आप क्या कहना चाहते हैं, आप कहिए ...
...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : यहाँ पर नंद लाल बोस की जीवनी नहीं पढ़ाई जा रही है,
अमृता शेरगिल की जीवनी नहीं पढ़ाई जा रही है ...
...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य : यह किताब पढ़ाई जा रही है क्या? ...
...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : यहाँ पढ़ाई जा रही है, मकबूल फिदा हुसैन की, जिनका काम है- हिन्दू देवी-देवताओं का अपमान करना, उनकी नंगी तस्वीरें बनाना। उनकी जो जीवन गाथा पढ़ाई जा रही है, उसमें इतनी गंदी बातें कही जा रही हैं कि आपको मैं क्या बताऊँ ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती सुषमा स्वराज़ : शिक्षा को दिशाहीन बनाया जा रहा है ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : NCERT की बुक्स में कुछ ऐसी बातें हैं, तो गवर्नरमेंट ...**(व्यवधान)**... You have brought it to the notice of the Government. ...**(Interruptions)**...

श्री रवि शंकर प्रसाद : यह गलती माफ ...**(व्यवधान)**... उपसभापति जी, ये सारी किताबें मेरे पास हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री सत्यदत्त घटुर्वेदी : सर, मैं यह कहना चाहता हूँ कि मेरी जानकारी के अनुसार ये कुछ पुस्तकें हैं, जो प्रस्तावित की गई हैं। वे अभी भी कमेटी के विद्याराधीन हैं ...**(व्यवधान)**... इस पर कोई ...**(व्यवधान)**... नहीं हुआ है ...**(व्यवधान)**... मैं माननीय सदस्य से जानना चाह रहा हूँ कि ...**(व्यवधान)**... मेरी बात तो सुन लें ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : नहीं, वह ठीक है ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रवीण राष्ट्रपाल (गुजरात) : तुम्हारे गुजरात में ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : राष्ट्रपाल जी, आप बैठिए ...**(व्यवधान)**... आप बैठिए ...**(व्यवधान)**... आप एक-दूसरे की चुटकी न लें ...**(व्यवधान)**... राष्ट्रपाल जी, आप बैठिए ...**(व्यवधान)**... देखिए, यह इश्यु है ...**(व्यवधान)**...

श्री एस० एस० अहलुवालिया : ये 2006 की किताबें हैं। और क्या चाहते हैं आप? ...**(व्यवधान)**. ये किताबें स्कूलों में पढ़ाई जा रही हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आप बैठिए। बैठिए!...**(व्यवधान)**...

श्री रवि शंकर प्रसाद : सर, मैं कंपलीट कर लूँ। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आप कंपलीट कीजिए। ...**(व्यवधान)**... I have other names also...**(Interruptions)**... प्लीज। ...**(व्यवधान)**... आप बोलिए। मैंने आपको समय दिया है, आप बोलिए, परन्तु आप पूरा समय नहीं ले सकते हैं। You cannot take everybody's time...**(Interruptions)**... रवि शंकर प्रसाद जी!...**(व्यवधान)**...

श्री रवि शंकर प्रसाद : आपका संरक्षण चाहिए, बोलने दीजिए।

श्री उपसभापति : बोलने दे रहा हूँ। सवाल यह है कि पूरी पुस्तक पढ़ने की जरूरत नहीं है।

श्री रवि शंकर प्रसाद : सर, अंतिम बात।...(व्यवधान)... सर, यह किताब नवीं कलास के बच्चों के लिए है। सुषमा जी, आप सुनिए, कितना गलत कहा है? इसमें एक कहानी है रीढ़ की हड्डी। इसमें कहा है - "तुम्हीं ने कहा था कि जरा ठीकठाक करके नीचे लाना। आजकल की लड़की कितनी भी सुंदर हो, विना टीमटास के भला कौन पूछता है। इसी मारे मैंने पाउडर दौरह इसके सामने रखा है।" यह क्या पढ़ाया जा रहा है?...(व्यवधान)... और सुनिए आप।...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज : इससे बड़ा महिलाओं का क्या अपमान होगा? आज पाउडर और क्रीम का इस्तेमाल कर लड़कियों को सुंदर बताया जा रहा है।...(व्यवधान)... यह क्या पढ़ा रहे हैं?...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : आप बैठिए।...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : ये सारी एनसीईआरटी की किताबें हैं।...(व्यवधान)... मैं ये सारी किताबें टेब्ल पर रखूँगा। ... (व्यवधान)... यह देश के बच्चों के साथ क्या हो रहा है?...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : नहीं, नहीं। इसकी जल्दत नहीं है।...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह टेब्ल पर रखने दीजए, सर। देयरमैन साहब पढ़ना चाहेंगे, आप पढ़ना चाहेंगे। ... (व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will not allow that... (Interruptions)... नहीं, नहीं, एलाउ नहीं है वह। ... (व्यवधान)... वैसे जो आपने कहना था, कह दिया। गवर्नमेंट रेस्पोस करना चाहती है। आप सुनिए। ... (व्यवधान)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : ये सारी किताबें स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं। ... (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : आपने अपनी बात कही है। ... (व्यवधान)... आप आगे मत आइए, मत आइए।... (व्यवधान)... आपको गवर्नमेंट का रेस्पोस नहीं चाहिए? ... (व्यवधान)... आपका मकसद क्या है, गवर्नमेंट का रेस्पोस चाहिए या नहीं? ... (व्यवधान)... There is no rule... (Interruptions)... Please take it back... (Interruptions)... अथोटिकेटेड होना है।... (व्यवधान)... There is no rule... (Interruptions)... यह क्या हो रहा है? ये यहां नहीं रख सकते आप, अहलुवालिया जी।... (व्यवधान)... आप देखिए, गवर्नमेंट का रेस्पोस आपको चाहिए, न? ... (व्यवधान)... आप जाइए, अपनी सीट पर। आप ललिंग पार्टी बाले रेसा नहीं कर सकते। Mr. Rashtrapal, why have you come?... (Interruptions)... You cannot come like this. You are in the ruling party... (Interruptions)... देखिए, ऐसा गडबड करने से क्या कुछ होगा? ... (व्यवधान)... आप जाइए अपनी सीट पर। यह गडबड नहीं, तो और क्या है? इसे क्या बोलते हैं आप? कौनसी जुबां में बोलते हैं आप? ... (व्यवधान)... आप लोग अपनी सीट पर जाइए, मंत्री रेस्पॉड करना चाहते हैं। ... (व्यवधान)... आप जाइए। ... (व्यवधान)... आप लोग अपनी सीट पर जाइए। ... (व्यवधान)... गवर्नमेंट रेस्पॉड करेगी। ... (व्यवधान)... आपका मकसद जदाब लेने का नहीं है। ... (व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी (पश्चिम बंगाल) : सर, मेरा एक सुझाव है।...(व्यवधान)... सुनिए।...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : सरकार जवाब दे रही है, सुनिए। ... (व्यवधान) ... आप लोग अपनी सीट पर जाइए।...(व्यवधान) ... मिस्टर अहलुवालिया, प्लीज हेल्प। ... (व्यवधान) ... माफ करना, आप सीरियस नहीं हैं, जवाब के लिए सीरियस नहीं हैं। आप लोग अपनी सीट पर जाइए।... (व्यवधान) ... मिस्टर अहलुवालिया, प्लीज हेल्प। ... (व्यवधान) ... आप गडबड करना चाहते हैं, आप सीरियस नहीं हैं।... (व्यवधान) ... आप क्या चाहते हैं? आप इस मैटर को सदन में उठाना चाहते हैं, आप और क्या चाहते हैं?... (व्यवधान) ... सदन में आप और क्या चाहते हैं?... (व्यवधान) ... गवर्नमेंट रेस्पॉड कर रही है, सुनिए।... (व्यवधान) ... आप सदन में विषय इसलिए उठाते हैं कि सरकार से जवाब हासिल करें, सरकार जवाब देने के लिए तैयार है लेकिन आप सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। ... (व्यवधान) ...

श्री सीताराम येचुरी : सर, मेरा एक सुझाव है।... (व्यवधान) ... इन्होंने जो सवाल उठाया है, वह बहुत गंभीर सवाल है।... (व्यवधान) ...

श्री उपसभापति : आप लोग सरकार से जवाब चाहते हैं, सरकार जवाब देने के लिए तैयार है। ... (व्यवधान) ... आप सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। ... (व्यवधान) ... जवाब सुनिए। जोशी जी, आप भी मंत्री थे, तब किसी विषय पर सरकार जवाब देती थी, अब सरकार जवाब देना चाहती है लेकिन आप सुनने को तैयार नहीं हैं। ... (व्यवधान) ...

डॉ मुरली मनोहर जोशी : मेरी भी तो बात सुनिए, मैं क्या कह रहा हूँ। ... (व्यवधान) ...

श्री सीताराम येचुरी : सर, यह बहुत गंभीर सवाल है, जो सवाल उठाया गया है। ... (व्यवधान) ...

डॉ मुरली मनोहर जोशी : मैंने यह कहा है कि प्रधानमंत्री जी को आकर इस बारे में, या तो आज या सोमवार को, अपनी रस्टेमेंट देनी चाहिए। ... (व्यवधान) ...

श्री उपसभापति : आप सरकार को तो सुनें पहले। ... (व्यवधान) ...

श्री सीताराम येचुरी : सर, मेरा एक सुझाव है। यह जो सवाल उठाया गया है, यह बहुत गंभीर सवाल उठाया गया है, आप चेयरमैन के नाते उन किताबों को ऐंग्जामिन करवाइए और सरकार से जवाब मांगिए। ... (व्यवधान) ...

श्री उपसभापति : वही तो। पर ये सुनने के लिए ही तैयार नहीं हैं, पहले मैं गवर्नमेंट का रेस्पॉस तो सुनूँ। ... (व्यवधान) ...

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry) : What about the books published during the NDA regime? ... (Interruptions) ... Now, you are talking about the present books. ... (Interruptions) ... Sir, when they were in power, they communalised everything. ... (Interruptions) ... All the textbooks were communalised by them. ... (Interruptions) ...

श्री उपसभापति : आप मेरी बात तो सुनिए! ... (व्यवधान) ... आप लोग प्लीज अपनी जगह पर जाइए। ... (व्यवधान) ... अहलुवालिया जी, आप लोग प्लीज अपनी सीट पर जाइए। ... (व्यवधान) ... मैं वही कह रहा हूँ, ये चाहते नहीं हैं। ... (व्यवधान) ... गवर्नमेंट का रेस्पॉस तो सुनिए। ... (व्यवधान) ...

श्री रवि शंकर प्रसाद : अर्जुन सिंह जी को लाइए। ... (व्यवधान) ...

श्री उपसभापति : आपको गवर्नमेंट के रेस्पॉस की जरूरत नहीं है, हाउस को डिस्टर्ब करना आपका मक्सद होगा शायद। ... (व्यवधान) ...

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, during the NDA rule, the Human Resource Development Ministry, under Dr. Murli Manohar Joshi was totally communalised. ... (Interruptions) ...

श्री उपसभापति : जब हाउस चल रहा है तो... (व्यवधान) ... पाणि जी, अब आप भी जाइए यहाँ से। ... (व्यवधान) ...

अहलुवालिया जी, उनको बोलने तो दीजिए, आप इतने सीनियर मेंबर हैं, आप किसी को बोलने तो दीजिए। ... (व्यवधान) ...

श्री सत्यदत्त चतुर्वेदी (उत्तरांचल) : उपसभापति महोदय, अभी जो पुस्तकों का हवाला दिया गया है, जो उन्होंने पढ़कर सुनाई हैं, मैं नहीं कह सकता कि वे पुस्तकें एन०सी०ई०आर०टी० के सिलेबस की पुस्तकें हैं अथवा नहीं हैं, मैं दोनों नहीं कह सकता। ... (व्यवधान) ... एक मिनट, सुन लीजिए।

लेकिन अगर ये पुस्तकें एन०सी०ई०आर०टी० के सिलेबस की हैं और बच्चों को स्कूलों में पढ़ाई जा रही हैं और उसमें जो कुछ भी पढ़ कर के सुनाया गया है वह लिखा हुआ है, तो हम सब की चिंता का विषय है। यह कोई भी नहीं चाहेगा, किसी भी दल का व्यक्ति नहीं चाहेगा कि हमारे बच्चों को इस तरह की बातें सिखाई जाएं और इसलिए सरकार की तरफ से तो मैं नहीं, मैं अपनी व्यक्तिगत सदस्य की हेसियत से यह बात और अनुरोध सरकार से भी करना चाहूँगा कि इन पुस्तकों का कृपा करके गंभीरता से कॉग्नीजेंस लीजिए और इनकी जांच कराइए कि क्या वास्तव में ये स्कूल में पढ़ाई जा रही हैं और अगर ये पुस्तकें एन०सी०ई०आर०टी० की तरफ से प्रेस्क्राइब की गई हैं और वे पढ़ाई जा रही हैं तो यह बहुत आपत्तिजनक है, इसके ऊपर सरकार को कोई न कोई कार्रवाई करनी चाहिए।

एस० एस० अहलुवालिया : आपको किताबें दी हैं, मंत्री महोदय यहाँ हैं। उसका सत्यापन करने के लिए हम तैयार बैठे हैं और देख लें और अभी यहाँ पर एनाउंस करें। ... (व्यवधान) ...

श्रीमती सुषमा स्वराज : उपसभापति जी, जो बात सत्यदत्त जी ने कही है उसमें एक है कि अगर ये किताबें एन०सी०ई०आर०टी० की हैं, तो हम चाहते हैं कि आप इन किताबों को टेब्ल पर रखने की इजाजत दें, ताकि वे सदन की प्रोपर्टी बन जाएं और सत्यदत्त जी भी देख लें,

सुरेश पंचौरी जी भी देख लें, राजीव शुक्ल जी भी देख लें और फिर उनको पढ़ने के बाद देखें कि जो बात हम कह रहे हैं वह बात सच है या नहीं। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करना चाहूंगी कि मेरे साथी जो किलाबंद सदन में रखना चाहते हैं, उन्हें टेबल पर रखने की अनुमति दी जाए, ताकि वे सदन की प्रोपर्टी बन जाए।

श्री उपसभापति : ऑर्थांटीफेट करके रखिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : और हमारे तामाम साथी उधर के पक्ष के भी उन किताबों को पढ़कर देखलें कि वाकई वह बात सच है या नहीं।...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : आप जरा बैठिए, मेहरबानी करके।...(व्यवधान)...

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति जी, मैं माननीय सदन के सभी सदस्यों से, चाहें वे किसी भी पार्टी से हों, कहना चाहता हूं कि यह एक गंभीर संवेदनशील मामला है और शासक दल के होने के बायजूद, भाई सत्यव्रत चतुर्वेदी जी ने जो कहा है, मैं उनकी सराहना करता हूं, हृदय की गहराइयों से। यह ऐसा संवेदनशील मामला है कि इसमें कोई राजनीति नहीं है। मैं यह चाहता हूं जैसा कि आदरणीय सुषमा जी ने कहा है कि इन्हें सदन के पटल पर रख दें और ये सदन की सम्पत्ति हो जाएं, और इसमें सभी देख लें और सत्यापित कर लें कि यह जो बड़ा अगर है, यह अगर मगर भी हट जाए और अगर इस तरह की बातें हो रही हैं तो निश्चित रूप से यह बहुत गंभीर मसला है और यह मसला सिर्फ आपका नहीं है, हम सब का है। हम सब मिल करके इस मसले पर विचार करें और विचार करके जो हिस्ट्री को डेस्ट्रॉय किया जा रहा है, हमारे इतिहास को बदला जा रहा है और नई पीढ़ी को एक विषाक्त वातावरण दिया जा रहा है, इसका मिल करके हम सब सामना करें।...(व्यवधान)...

श्री एस० एस० अहलुवालिया : सर, ... (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : अहलुवालिया जी, जरा दूसरों को भी मौका दो, आप ही बोलते रहेंगे।...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी : सर, यह जो बात उठाई गई है यह बहुत ही गंभीर है। जो आज जानकारी दी गई, अगर यह सही है तथा ये प्रेस्काइड किताबों में हैं तो इसको दुरुस्त करने की जरूरत है। इसके अंदर हम समझते हैं कि कोई भी।...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज : और माफी मांगने की भी जरूरत है।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : इनको दुरुस्त करने की जरूरत नहीं है, बल्कि इसके लिए जिम्मेदार कौन है... (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : उनको अपनी बात करने दीजिए।...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी : सर, आपने हमें बोलने की अनुमति दी है। आप सुनिएगा।

श्री उपसभापति : वही मुश्किल है। आपको बोलने के लिए अनुमति देते हैं और दूसरे खड़े होकर बोलने लग जाते हैं।

श्री सीताराम येचुरी : हमने कहा कि इसको दुरुस्त करने की जरूरत है, पहली बात। गुनाहगार को सजा देने की जरूरत है, दूसरी बात। और जो भी है आप इसके बारे में जांच करवाइये कि यह किताब कैसे आई, कब और कैसे लिखी गई। ... (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : गवर्नमेंट को रेसपांड करने दीजिए। ... (व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी : सर, मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह कर रहा हूँ कि इसको दुरुस्त करवाइये और इसके ऊपर एक्शन लीजिए।

श्री अवनि राय (पश्चिमी बंगाल) : उपसभापति जी, ऐसा है कि कक्षा छह से लेकर कक्षा ग्यारह तक साहित्य की हो या इतिहास की हो, जिस किताब में इस ढंग से लिखा गया है, उसके बारे में टी०वी० में इससे पहले भी बहुत बार ऐतराज किये गये हैं। उसमें ऐसे शब्द हैं, जो उसमें नहीं लिखे जाने चाहिए। उसमें गाली-गलौज है, जात उठाकर बात कही गई है और नीचे लिखा गया है कि ये शब्द असंवैधानिक हैं, फिर भी लिखे गये हैं और यह एक स्टार लगाकर दिया गया है। इन किताबों के बारे में एक दिन से नहीं, बहुत दिनों से आवाज उठाई जा रही है। सरकार के लिए उद्यित है कि वह इन सब किताबों को, कक्षा छह से लेकर कक्षा ग्यारह तक इतिहास और साहित्य की जितनी किताबें हैं, उन पर अभी तुरन्त बैन होना चाहिए, अन्यथा बच्चों के मन पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा।... (व्यवधान).... आप जांच करें अथवा जांच नहीं करें, लेकिन जो-जो इसके साथ हैं, जिन्होंने इनको लिपिबद्ध किया है, जो नाम हैं, लेखक को छोड़िये, पुराने किसी लेखक की होगी, लेकिन जिन्होंने इनका संकलन किया है, उनको भी सजा मिलनी चाहिए। यह एनसीईआरटी की एकाध किताब में नहीं है, बहुत सारी किताबों में इस प्रकार की बातें हैं। एनसीईआरटी की किताबें पूरे देशभर में, जहां सीबीएसई का कोर्स है, उसमें पढ़ाई जाती हैं, आल इंडिया के कोर्स में पढ़ाई जाती हैं। यह बड़ी दुखदाई और चिंताजनक बात है। इस पर इमीडिएट सरकार की ओर से, मैं सोचता हूँ कि एचआरडी मिनिस्ट्री की ओर से इस बारे में कदम उठाये जाने चाहिए। ... (व्यवधान).... ये किताबें बैन होनी चाहिए।

श्री मंगनी लाल मंडल (बिहार) : उपसभापति जी, माननीय सदस्य श्री रवि शंकर प्रसाद जी ने जिस विषय का यहां उल्लेख आपकी अनुमति से किया है, यह बहुत गंभीर विषय है। यह राजनीति का विषय नहीं है। यह सिर्फ शिक्षा का विषय नहीं है, यह हमारे संस्कार, संस्कृति और भविष्य से जुड़ा हुआ विषय है। एनसीईआरटी के बारे में अक्सर कई बातें समाचार-पत्रों में अनावश्यक, अनर्गत छपती रहती हैं, और ऐसी बातें छपती हैं, जिनसे इस देश के करोड़ों लोगों की आस्था पर ही प्रहार नहीं होता है, बल्कि ऐसा लगता है कि हम शिक्षा के नाम पर कोई दूसरी चीज परोस रहे हैं अपने नौनिहालों के बीच में। महोदय, इसीलिए हमको दो-तीन बातें नियेदन करनी हैं। पहली बात, जो उन्होंने पुस्तक के रखी है, जो विषय उन्होंने उठाया है, उसकी जांच होनी चाहिए। नम्बर दो, जो इसमें लिप्त पदाधिकारी हैं, शिक्षाविद हैं, उनको दंडित किया जाना चाहिए। नम्बर तीन, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था की जानी चाहिए कि हमारी संस्कृति और हमारी सांस्कृतिक धरातल, पृष्ठभूमि और शिक्षा को बर्बाद करने वाली कोई टीम भविष्य में ऐसी गठित नहीं हो, जो इस तरह की पुस्तकें लिखें, इन तीनों चीजों की गारंटी होनी चाहिए। ... (व्यवधान).... इन सारी पुस्तकों को सदन में रखने के लिए अनुमति मिलनी चाहिए। घन्यवाद।

श्री विजय जे० दर्ढा (महाराष्ट्र) : सर, मैं रवि शंकर जी का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने एक गंभीर विषय के ऊपर इस सदन का ध्यान आकर्षित किया। कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि शिक्षा के अंदर राजनीति नहीं होनी चाहिए। मैं यह मानता हूं कि जब बीजेपी की सरकार थी तब इन्होंने किताबों में बहुत राजनीति की, उन्होंने राजनीति की, इसलिए इस गवर्नर्मेंट को भी करना चाहिए, ऐसा मैं नहीं मानूँगा। आप जानते हैं कि क्या-क्या आप लोगों ने किया? ...**(व्यवधान)**... पंडित जी, यहां पर बैठे हैं। ...**(व्यवधान)**...

डा० मुरली मनोहर जोशी : सर, इस पर हम बहस करने के लिए तैयार हैं। ...**(व्यवधान)**... हमने क्या किया था और क्या अब हो रहा है, इस पर हम पूरे दिन बहस करने के लिए तैयार हैं। ...**(व्यवधान)**... हम यहां तैयार हैं और आपके अखबार में भी बहस करने के लिए तैयार हैं। ...**(व्यवधान)**... देश के किसी भी कोने में बहस करने के लिए तैयार हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आप बैठ जाइये। ...**(व्यवधान)**...

डा० मुरली मनोहर जोशी : आप जो शब्द प्रयोग कर रहे हैं, हमने कुछ नहीं किया था। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आप जरा सुनिए। ...**(व्यवधान)**... आप उनको बोलने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...आप बोलते हैं, तो वह भी बोलते हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री विजय जे. दर्ढा : विशेषरूप से, ...**(व्यवधान)**... मैं अपनी बात संक्षिप्त में रख रहा हूं। इसलिए कि उन्होंने किया, तो हमें भी करना चाहिए, यह मैं मानने वालों में से नहीं हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री रुद्रनारायण पाणि (उडीसा): महोदय, उन्होंने कहा ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आप, क्या पाणि जी। ...**(व्यवधान)**...

श्री विजय जे. दर्ढा : उसकी जांच होनी चाहिए। ...**(व्यवधान)**... और जिन लोगों ने ...**(व्यवधान)**...

श्री रुद्रनारायण पाणि : उन्होंने यह कहा कि राजनीति की ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आप बैठ जाइये। आप हर बात पर इंटरफ़ेयर करेंगे क्या ? ...**(व्यवधान)**...प्लीज आप बैठ जाइये। ...**(व्यवधान)**... आप हर बात पर मत उठा कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री विजय जे.दर्ढा : सर, इसकी पूरी जांच होनी चाहिए और यह मापदंड तय होने चाहिए कि इस प्रकार की हरकतें समय-समय पर न हों।

श्री राजीद शुक्ल (महाराष्ट्र): सर ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : अब आप सरकार की बात भी सुन लीजिए। यह डिबेट नहों हो रही है। I will not allow everybody to speak. ...**(Interruptions)**...

श्री राजीव शुक्ल : सर, मैं केवल एक मिनट लेना चाहता हूँ।

श्री उपसभापति : यह डिबेट नहीं हो रही है, जीरो ऑवर है।... (व्यवधान)...

What is this? Everybody wants to speak.

श्री राजीव शुक्ल : सर, हम इस बात से सहमत हैं कि जांच होनी चाहिए लेकिन जांच मध्य प्रदेश और गुजरात की पुस्तकों की भी होनी चाहिए।... (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : वह ठीक है।... (व्यवधान) ...अच्छी बात है।... (व्यवधान)...

कार्मिक, लोक शिकायत और पैंशन मंत्रालय के राज्य बंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य बंत्री (श्री सुरेश पांडीरी) : इज्जतमुदाब उपसभापति महोदय, विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में और उनके लिए क्या पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो, क्या न हो, यह एक बहुत संजीदगी का विषय है। इसमें निश्चित रूप से हमें अपनी जिम्मेदारी और जवाबदेही का निर्वहन बहुत गंभीरता से करना चाहिए - मैं इस बात का पक्षधर हूँ। इस सदन के सभी सम्माननीय सदस्यों की भी यही राय है कि जो आज के बालक हैं, वे कल के भारत के नागरिक हैं, उनके लिए किस प्रकार की पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाए, इसको बहुत गंभीरता से राष्ट्र हित में लिया जाना आज के समय का तकाजा है। एनसीईआरटी की पुस्तकों से संबंधित जो मुद्दा सम्मानित सदस्यों ने उठाया है और जिन बिन्दुओं का जिक्र किया है तथा उस संबंध में जो गंभीरता दिखायी है, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि सदन की भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इसकी जांच कराया जाना आवश्यक है। मैं सरकार की ओर से इस बात की... (व्यवधान)...

श्री राजीव शुक्ल : मध्य प्रदेश और राजस्थान की भी जांच हो।... (व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद : आप चुप रहिए।... (व्यवधान)...

श्री सुरेश पांडीरी : जांच करा लूँगा और इसको बहुत गंभीरता से लेते हुए जो संबंधित मंत्रालय है, सदन की भावनाओं से उन्हें अवगत करा दूँगा।

श्री उद्धनरायण पाणि : समय सीमा बता दीजिए। ... (व्यवधान)...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL (Gujarat): Sir, I want the kind attention of the House to a very serious problem.

श्री रवि शंकर प्रसाद : सर, यह बहुत गंभीर विषय है। पूरे हाउस ने कहा है।... (व्यवधान) ... माननीय सुरेश जी कुछ समय सीमा बता दें।... (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : वे बता देंगे।... (व्यवधान) ... It is an assurance. Please...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, what is this? ... (Interruptions)...

श्री विक्रम वर्मा (मध्य प्रदेश): सर, इसी शैक्षणिक सत्र में ये पुस्तकें हट जानी चाहिए नहीं तो उन्हें बच्चे पढ़ेंगे।... (व्यवधान)...

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश): मान्यवर, मैंने एक नोटिस दिया था।

श्री उपसभापति : किस बारे में?

श्री कलराज मिश्र : प्रधानमंत्री निवास के अंदर जो... (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : वह अभी एडमिट नहीं हुआ है।

श्री कलराज मिश्र : मान्यवर, आतंकवाद... (व्यवधान)...

**Alleged failure of Government of Gujarat in providing relief
to the people affected due to heavy rains and floods**

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL (Gujarat): Sir, I want to bring to the kind notice of this House that the Government of Gujarat has totally failed in providing relief to the people affected due to heavy rains, floods. It was not a natural disaster. It was a man-made disaster. We in Gujarat always welcome rain. We pray for rain. Rain has not created the problem. It was the mismanagement by the Irrigation Minister who stays in Surat. The Chief Minister has himself admitted and he is now talking of appointing a Commission of Inquiry for early and late release of water from the Ukai Dam, from the Dharoi Dam from where the Surat district, the Anand district, the Kheda district, the Ahmedabad district thousands and thousands of people are marooned, hundreds of people are dead, thousands of animals are dead. The problem of Surat is they are not able to remove the mud, they are not able to remove the bodies of dead animals. In the previous flood the Central Government gave Rs. 500... (Interruptions)... Sir, I will complete it.

श्री कांजीभाई पटेल (गुजरात) : यह सच नहीं है... (व्यवधान)...

श्री सुरेन्द्र लाठ (उडीसा) : यह सच नहीं है।... (व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You complete it. That will not go on record.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, the Central Government has given Rs. 500 crores to the Government of Gujarat. They have spent only Rs. 378 crores. The balance amount is remaining. This time hon. Prime Minister visited, hon. Defence Minister visited, hon. Home Minister visited and again the Government of India has announced Rs. 500 crore relief to the State of Gujarat. The very next day the Chief Minister of the State was criticising the hon. Prime Minister of the country. ये बोलते हैं कि अभी तक पैसा नहीं आया। He does not know that money is not sent in cash from Delhi to Ahmedabad.